Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 6, August-2018, ISSN 2230-7540

चंपा रण सत्याग्रह तथा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर इसका प्रभाव

Upendra Kumar*

M.A. (History) U. G. C. – Net

सार - भारतवर्ष के सभ्यता इतिहास में पुरातन सभ्यताऐं सिन्धु घाटी, मोहनजोदडो जैसी सम्पन्न सभ्यताओं के पुरातन प्राप्त अवशेषों एवं भारत के कई प्राचीन ऋषि ग्रंथों में मेघवाल समाज की उत्पत्ति एवं उन्नति की जानकारीयां मिली हैं. साथ ही समाज के प्रातरू स्मरणीय स्वामी गोकुलदास जी द्वारा सदग्रंथों से प्राप्त जानकारी के आधार पर भी समाज के सृजनहार ऋषि मेघ का विवरण ज्ञात हुआ है. मेघवाल इतिहास गौरवशाली ऋषि परम्पराओं वाला तथा शासकीय स्वरूप वाला रहा है. मेघऋषि का इतिहास भारत के उत्तर-पश्चिमी भूभाग की सरसब्ज सिन्धुघाटी सभ्यता के शासक एवं धर्म संस्थापक के रूप में रहा है जो प्राचीनकाल में वस्त्र उद्दोग, कांस्यकला तथा स्थापत्यकला का विकसित केन्द्र रहा था. संसार में सभ्यता के सूत्रधार स्वरूप वस्त्र निर्माण की शुरू आत भगवान मेघ की प्रेरणा से स्वयं भगवान शिव द्वारा ऋषि मेघ के जरिये कपास का बिजारोपण करवाकर कपास की खेती विकसित करवाई गयी थी. जो समस्त विश्व की सभ्यताओं के विकास का आधार बना. समस्त उत्तर-पश्चिमी भूभाग पर मेघऋषि के अनुयायियों एवं वंशजों का सामाज्य था. जिसमें लोगों का प्रजातांत्रिक तरीके से विकास हुआ था जहां पर मानवमात्र एकसमान था. लेकिन भारत में कई विदेशी कबीले आये जिनमें आर्य भी एक थे, उन्होंने अपनी चतुराई एवं बाहुबल से इन बसे हुये लोगों को खंडित कर दिया

----------X----------

प्रस्तावना

सम्पूर्ण भारत में बिखर जाने लिये विवस कर दिया. चूंकि आर्य समुदाय शासक के रूप में एवं सभी संसाधनों के स्वामी के रूप में यहां स्थापित हो चुके थे उन्होंने अपने वर्णाश्रम एवं ब्राह्मणी संस्कृति को यहां थोप दिया था. ऐसी हालत में उनसे हारे हुये मेघऋषि के वंशजों को आर्यों द्वारा नीचा दर्जा दिया गया. जिसमें आज के वर्तमान के सभी आदिवासी, दलित एवं पिछडे लोग शामिल थे भारत में स्थापित आर्य सभ्यता वालों ने यहां पर अपने अनुकुल धर्म, परमपरायें एवं नियम, रिवाज आदि कायम कर दिये थे जिनमें श्रम सम्बन्धि कठिन काम पूर्व में बसे हुये लोगों पर थोपकर उनसे निम्नता का व्यवहार किया जाना शुरू कर दिया था तथा उन्हें पुराने काल के राक्षस, नाग, असुर, अनार्य, दैत्य आदि कहकर उनकी छवि को खराब किया गया. इन समूहों के राजाओं के धर्म को अधर्म कहा गया था. इस प्रकार इतिहास के अंशों को देखकर मेघऋषि के वंशजों को अपना गौरवशाली अतीत पर गौरवान्वित होना चाहिये तथा वर्तमान व्यवस्था में ब्राह्मणवादी संस्कृति के थोपी हुई मान्यताओं को नकारते हुये कलियुग में भगवान रामदेव एवं बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर के बताये आदर्शों पर अमल करते हुये अपने अधिकार प्राप्त करने चाहिये. समाज में मेघवंश को सबल बनाने के लिये स्वामी गोकुलदासजी महाराज, गरीबदास जी महाराज जैसे संत हुये हैं जिन्होंने मेघवाल समाज के गौरव को भारत के प्राचीन ग्रंथों से समाज की उत्पत्ति एवं विकास का स्वरूप उजागर कर हमें हमारा गौरवशाली अतीत बताया है. तथा हमें निम्नता एवं कुरीतियों का त्याग कर सत कर्मों की ओर बड़ने का मार्ग दिखाया है.

मेघवंश इतिहास:-

मेघजाति की उत्पत्ति एवं निकास की खोज स्वामी गोकुलदासजी महाराज डूमाडा (अजमेर) ने अपनी खोज एवं लेखन के जरिये मेघवाल समाज की सेवा में प्रस्तुत की है जो इस प्रकार हैय सृष्टि के आदि में श्रीनारायण के नाभिकमल से ब्रह्मा, ब्रह्मा ने सृष्टि रचाने की इच्छा से सनक, सनन्दन, सनातन, सन्तकुमार इन चार ऋषियों को उत्पन्न किया लेकिन ये चारों नैष्टिक ब्रह्मचारी रहे फिर ब्रह्मा ने दस मानसी पुत्रों को उत्पन्न किया. मरीचि, अत्रि अंगिरा, पुलस्त्व, पुलह, क्रतु, भृगु, वशिष्ट, दक्ष, और नारद. ब्रह्मा ने अपने शरीर के दो खण्ड करके दाहिने भाग से स्वायम्भुव मनु (पुरूष) और बाम भाग से स्तरूपा (स्त्री) को उत्पन्न करके मैथुनी

www.ignited.in

सृष्टि आरम्भ की. स्वायम्भु मनु स्तरुपा से 2 पुत्र - उत्तानपाद और प्रियव्रत तथा 3 कन्याऐं आकुति, प्रसूति, देवहूति उत्पन्न हुई. स्वायम्भु मनु की पुत्री आकुति का विवाह रूचिनाम ऋषि से, प्रसूति का दक्ष प्रजापति से और देवहुति का कर्दम ऋषि से कर दिया. कर्दम ऋषि के कपिल मुनि पैदा हुये जिन्होंने सांख्य शास्त्र बनाया. कर्दम ऋषि के 9 कन्याऐं हुई जिनका विवाहरू कला का मरीचि से, अनुसूया का अत्रि से, श्रद्धा का अंगिरा ऋषि से, हवि का पुलस्त्य ऋषि से, गति का पुलह से, योग का क्रतु से, ख्याति का भृगु से, अरुन्धति का वशिष्ट से और शांति का अर्थवन से कर दिया. ब्रह्माजी के पुत्र वशिष्ट ऋषि की अरुन्धति नामक स्त्री से मेघ, शक्ति आदि 100 पुत्र उत्पन्न हुये. इस प्रकार ब्रह्माजी के पौत्र मेघ ऋषि से मेघवंश चला. वशिष्ट ऋषि का वंश सूर्यवंश माना जाता है. ब्रह्माजी के जिन दस मानसी पुत्रों का वर्णन पीछे किया गया है उन ऋषियों से उन्हीं के नामानुसार गौत्र चालू हुये जो अब तक चले आ रहे हैं. ब्रह्माजी के ये पुत्र, पौत्र और प्रपौत्र ही गुण कर्मानुसार चारों वर्णों में विभाजित हुयेद्य श्रीमदभागवत में एक कथा आती है कि मान्धाता के वंश में त्रिशंकु नामक एक राजा हुये, वह सदेह स्वर्ग जाने के लिये यज्ञ की इच्छा करके महर्षि वशिष्ट के पास गये और इस प्रकार यज्ञ करने के लिये कहा. वशिष्टजी ने यह कहकर इन्कार कर दिया कि मुझे ऐसा यज्ञ कराना नहीं आता. यह सुनकर वह वशिष्टजी के 100 पुत्रों के पास जाकर उनसे यज्ञ करने को कहा. तब उन्होंने उस राजा त्रिशंकु को श्राप दिया कि तू हमारे गुरू का वचन झूंठा समझकर हमारे पास आया है इसलिये तू चांडाल हो जायेगा, वह चांडाल हो गया. फिर वह ऋषि विश्वामित्र के पास गया, विश्वामित्र ने उसकी चांडाल हालत देखकर कहा कि हे राजा तेरी यह दशा कैसे हुई. त्रिशंक ने अपना सारा वृतान्त कह सुनाया. विश्वामित्र उसका यह वृतान्त सुनकर अत्यन्त क्रोधित हुये और उसका वह यज्ञ कराने की स्वीकृति दे दी विश्वामित्र ने राजा त्रिशंकु के यज्ञ में समस्त ब्राह्मणों को आमंत्रण किया मगर वशिष्ट ऋषि और उनके 100 पुत्र यज्ञ में सम्मिलित नहीं हुये. इस पर विश्वामित्र ने उनको श्राप दिया कि तुम शूद्रत्व को प्राप्त हो जावो. उनके श्राप से वशिष्ट ऋषि की सन्तान मेघ आदि 100 पुत्र शूद्रत्व को प्राप्त हो गयेद्य

चंपारण सत्याग्रह तथा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर इसका प्रभाव

भारत में कई सामाजिक और धार्मिक सेनाएँ बनी हैं. इन्हीं में एक नाम और जुड़ा है 'मेघ सेना' का. मेघवाल समाज का संगठन रजिस्टर्ड है और इसकी उपविधि भी है. मेघ सेना इसी की एक इकाई है. 07-02-2009 को राजस्थान में मेघ सेना का गठन हुआ. इसके लिए मेघवाल समाज की एक बैठक की गई जिसमें प्रदेश कार्यकारिणी और जिला केंद्र बनाए गए. इसी बैठक में मेघ सेना का ड्रेस कोड और वर्दी निर्धारित की गई. 04-07-2009 को प्रदेश कार्यकारिणी की प्रथम बैठक हुई जिसमें सभी जिलों के मेघ सैनिक आमंत्रित किए गए. तारीख़ 31-10-2009 को जयपुर में मेघ सेना का प्रथम फ्लैग मार्च किया गया. फ्लैग मार्च के बाद एक बैठक की गई जिसमें यह संकल्प पास किया गया कि विभिन्न नामों से जानी जाने वाली सभी मेघवंशी जातियों का आपसी संपर्क बढ़ाया जाए और उन्हें एक सूत्र में बाँधा जाए.

इसी सिलसिले में दिनाँक 01-11-2009 को राष्ट्रीय सर्वमेघवंश महासभा का गठन किया गया. इसमें भारत के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिनिधियों ने भाग लिया. यह बैठक होटल इंडियाना क्लासिक, जयपुर में की गई. इसमें तय किया गया कि मेघवंशी जातियों के विभिन्न संगठनों को एक मंच पर लाने का कार्य शीघ्र निष्पादित किया जाए. कार्यकारिणी बनाई गई. प्रदेश अध्यक्षों के चयन का निर्णय लिया गया. संकल्प पास किया गया कि मेघवंश समाज की विभिन्न जातियों के संगठनों से संपर्क बढ़ा कर उन्हें राष्ट्रीय मेघवंश मंच से जोड़ा जाए और साथ ही मेघ सेना को राष्ट्रीय स्तर पर संगठित किया जाए.

इसी दिन महिला विंग का गठन किया गया जिसकी अध्यक्षा श्रीमती प्रमिला कुमार (हाईकोर्ट की रिटायर्ड जज और कंज्यूमर स्टेट फोरम की चेयरपर्सन) हैं. यूथ विंग भी गठित किया गया और श्री नरेंद्र पाल मेघवाल को इसके अध्यक्ष बनाया गया.

21-03-2010 को राष्ट्रीय सर्वमेघवंश महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक हुई जिसमें एक फिल्म के निर्माण का फैसला लिया गया ताकि मेघवंशीय संगठनों में एकता की प्रक्रिया तेज की जा सके. इसकी पटकथा और गीत लिखे जा चुके हैं. निर्माण की कार्रवाई चल रही है.

दिनाँक 04-07-2010 को कार्यकारिणी और प्रदेशाध्यक्षों की बैठक हुई. तय हुआ कि प्रत्येक प्रांत में सम्मेलन आयोजित किए जाएँ. उक्त योजना के तहत नवंबर और दिसंबर 2010 में पंजाब, राजस्थान (श्रीगंगानगर), हरियाणा (हिसार) और मध्य प्रदेश में उज्जैन या मंदसौर में सम्मेलन आयोजित किए जाएँगे.

विशेष टिप्पणी:

भारत में कई सेनाओं का गठन हुआ है. कुछ ने सामाजिक कार्य किया और कुछ हिंसात्मक गतिविधियों का पर्याय बन गईं और कुछ राजनीतिक पार्टियों का महत्वपूर्ण अंग बनीं. मेघ सेना अभी स्वरूप ले रही है. इसकी भूमिका का मूल्यांकन अभी कुछ वर्ष बाद ही हो पाएगा. जहाँ तक मेघवाल समाज का प्रश्न है मेरी जानकारी में है कि इस समाज के लोगों को बारात के मौके पर घोड़ी या कार का प्रयोग नहीं करने दिया जाता. यह गाँवों में

www.ignited.in

होता है. दूल्हे को घोड़ी से उतार कर पीटने या बारात पर पत्थर फेंकने की कई घटनाएँ रपोर्ट हो चुकी हैं. मीडिया ऐसा करने वालों को 'दबंग' जैसे शब्दों से महिमा मंडित करने का कार्य अनजाने में कर डालता है. शिक्षित वर्ग इस विषय में एक मत होगा कि किसी की बारात पर पत्थर फेंकना वास्तव में संवेदनहीन और अनपढ़ लोगों का कार्य होता है.

शोध का महत्त्व

श्कोआपरेटिवस इन जनरेशन ऑफ एम्पलायमेंट - ए स्टेडीश् में कहा गया है कि अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में सहकारिता का महत्वपूर्ण योगदान एवं अंशदान है। कृषि ऋण में करीब 43 प्रतिशत , उर्वरक उत्पादन में 25 प्रतिशत, चीनी उत्पादन में 50 प्रतिशत, हैंडलूम में 54 प्रतिशत, गेहूं की वसूली में 33 प्रतिशत तथा ग्रामीण स्तर पर भंडारण क्षमता में 65 प्रतिशत तक सहकारी क्षेत्र का अंशदान है। सहकारी क्षेत्र प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से 159.40 लाख लोगों को रोजगार उपलब्धा कराने वाला सबसे बड़ा क्षेत्र है।

सहकारी आवास आंदोलन सम्पूर्ण देश में फैला हुआ है। कुछ वर्षों में आवास सहकारिताओं ने अपनी संख्या एवं आकार के साथ-साथ ढांचे में भी विकास किया है। आवास सहकारिताएं 3 स्तरीय ढ़ांचे के रूप में कार्य करती हैं जैसे- आधारभूत स्तर पर प्राथमिक सहकारिताएं हैं, जिनकी कुल 92000 समितियां हैं तथा जिनकी सदस्यता 65 लाख है। 26 अपेक्स संस्थाएं राज्यों में हैं तथा एक राष्ट्रीय आवास सहकारी संघ है। मार्च 2009 तक राज्यों में अपेक्स संस्थाओं ने एल.आई.सी., सहकारी बैंकों एवं अन्य वित्ताय संस्थाओं से 10,159 करोड़ रुपये का ऋण लिया तथा 10,709 करोड़ रुपया सदस्यों में 23.84 लाख आवासीय इकाईयों को बनाने के लिए वितरित किया। नेशनल अर्बन हाउसिंग एण्ड हैबीटेट पॉलिसी में भारत सरकार ने आवास सहकारिताओं को बड़ी भूमिका सौंपी है। सभी के लिए आवास प्रमुख क्षेत्र है। प्रतिवर्ष 20 लाख अतिरिक्त आवास निर्माण के साथ सरकार ने वर्ष 1998-99 में आवास कार्यक्रम शुरू किया। प्रतिवर्ष सहकारिताओं को एक लाख आवासीय इकाइयों के निर्माण का कार्य सौंपा गया है। कार्यक्रम के प्रथम 11 वर्षों में सहकारिताओं ने 9.51 लाख आवासीय इकाइयों का निर्माण किया था। उसी प्रकार सहकारिताओं को ग्रामीण आवासीय इकाइयों का निर्माण का कार्य भी सौंपा गया है। राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम ने आवासीय ग्रामीण सहकारिताओं को वित्तीय सहायता देनी शुरू कर दी है जिसका सम्पूर्ण सहकारी क्षेत्र पर हितकर प्रभाव पड़ेगा।

भारत में सहकारी ऋण ढांचा सहकारिता आंदोलन का सबसे पुराना एवं बड़ा ढ़ांचा है। इसमें ग्रामीण ऋण में अल्पावधि एवं दीर्घावधि ऋण संस्थाएं, वाणिज्यिक बैंक, आर.आर.बी., नाबार्ड एवं भारतीय रिजर्व बैंक आदि सम्मिलित हैं। शहरी ऋण में वाणिज्यिक बैंक, शहरी सहकारी बैंक एवं शहरी ऋण सहकारी समितियां आदि शामिल हैं। कर्जदार संस्था के निश्प्रभावशीलता में कृषि उत्पादनों की बढ़ोत्तारी, रोजगार सृजन एवं उसके द्वारा ग्रामीणों में आय बढ़ोत्तरी में सहकारी ऋण ढांचा एक निर्णायक भूमिका अदा कर रहा है। यह एक महत्वपूर्ण कदम है कि सहकारिताएं जिनके पास केवल 6 प्रतिशत कुल बैंकों की जमा राशि है। वह 50 प्रतिशत छोटे किसानों की अल्पावधि कृषि संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। शहरी सहकारी ऋण ढांचा समाज के कमजोर वर्ग एवं मध्यम वर्गीय दर्जे की आवश्यकताओं को पूरा करता है। उनको मजबूत, व्यावहार्य, जीवनक्षम, स्वायत्ता, गतिशील एवं प्रजातांत्रिक बनाने में पहल की गई है।

वर्ष 2007-08 में 4,73,8970 लाख रुपये अल्पावधि, 1025270 लाख रुपये मध्यावधि एवं रुपये 20,2110 लाख दीर्घावधि के लिए उत्पादन अग्रिम ऋण के रूप में सहकारिताओं द्वारा प्रदान किए गए। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सहकारिताओं का हिस्सा कृषि ऋण वितरण में 19 प्रतिशत, उर्वरक वितरण में 36 प्रतिशत, उर्वरक उत्पादन में 26 प्रतिशत, चीनी उत्पादन में 47 प्रतिशत, गेहूं उत्पादन में 33 प्रतिशत, पशु चारा उत्पादन एवं वितरण में 50 प्रतिशत, खुदरा उचित मूल्य दुकान में 20 प्रतिशत, तिलहन विपणन में 49 प्रतिशत एवं इससे भी अधिक है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली को बढ़ावा देने तथा उपभोक्ता को उचित मूल्य पर अच्छी वस्तुएं दिलवाने में उपभोक्ता सहकारिताएं एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं। सामान्यतरू सभी पैक्स, लैम्पस एवं विपणन समितियां ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता समितियां चला रहे हैं। कुछ समितियों ने शहरी क्षेत्रों एवं अर्ध शहरी क्षेत्रों में विभागीय भंडार खोल रखे हैं। इसका मुख्य उद्देश्य मूल्य बढ़ोत्तारी को रोकना तथा निजी क्षेत्रों को कड़ी प्रतिस्पर्धा देना है। उपभोक्ता सहकारिताएं बड़ी संख्या में ग्रामीण क्षेत्रों में आवश्यक उपभोग वस्तुओं के वितरण के लिए तथा ग्रामीण गरीब वर्गों के जीवन स्तर के रखरखाव के लिए उत्तारदायी हैं।

सहकारिता खाद्य सुरक्षा के संबंध में बहुत बड़ी भूमिका निभा रही हैं। यद्यपि, अनेकों संस्थाएं खाद्य सुरक्षा के सुधार की प्रक्रिया में लगी हुई हैं। जिसमें भारत सरकार एवं उनके

विभिन्न विभाग एवं संस्थाएं, किसान, एनजीओ समुदाय, निजी व्यावसायिक क्षेत्र आदि प्रमुख हैं। विश्व खाद्य समिति कार्य योजना द्वारा अच्छी तरह से सचेत किया गया कि जिन राज्यों में ग्रामीणों के लिए आर्थिक एवं सामाजिक संस्थाएं हैं उनको बढ़ावा दिया जाए।

निष्कर्ष

महिलाओं एवं युवकों के लिए सहकारिता बहुत ही अहम् भूमिका अदा करती हैं क्योंकि इनके द्वारा महिलाओं की दैनिक प्रयोग तथा व्यावहारिता दोनों ही प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिलती है। भले ही केवल महिला सहकारिताएं हों, अथवा पुरुष एवं महिलाओं की मिश्रित सहकारिताएं हों, यह महिला सदस्यों तथा उनके कर्मचारियों के लिए एक प्रभावशाली संगठनात्मक साधन उपलब्ध कराती हैं जिसके द्वारा कार्य करने के उत्तम अवसर उपलब्ध कराकर, बचत एवं ऋण की सुविधाएं प्रदान कर, स्वास्थ्य, आवास, सामाजिक सेवाएं, शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था कर उनके जीवन स्तर में सुधार लाया जा सकता है। सहकारिताएं महिलाओं को अनेक आर्थिक क्रियाकलापों में सहभागिता अदा करने तथा उनकी निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करने का अवसर प्रदान कराती हैं। इस प्रकार की भागीदारी द्वारा महिलाओं में आत्म-गौरव तथा आत्म-निर्भरता की भावना पैदा होती है। सहकारिताएं महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों में सुधार लाने में भी अपनी अहम् भूमिका अदा करती हैं जिसके परिणाम स्वरूप समाज में समानता की भावना बढ़ती है तथा संस्थागत भेदभाव में परिवर्तन आता है।

संदर्भ सूची

1. एजाज, अहमद - उत्तर प्रदेश को - आपरेटिव सोसाइटी एक्ट 1965
2. ओझा जी - मैनेजमेन्ट डवलपमेन्ट फॉर कोआपरेटिव बैकुण्ठ मेहता नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर कोआपरेटिव मैनेजमेन्ट, पूना 1990
3. बेदी, रधुवंश देव - सहकारिता के सिद्धान्त इतिहास एवं व्यवहार, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1981
4. भटनागर, के.पी. हजेला, टी.एन. निगम एन.एस. - सहकारिता देश और विदेश में, किशोर पब्लिकेशन हाउस, कानपुर, 1964
5. भटनागर, नंदलाल-सहकारिता के सिद्धान्त एवं भारतीय सहकारिता, रस्तौगी एण्ड कं. मेरठ, 1959
6. दुबेशी, पी.आर. प्रिंसिपल एण्ड फिलासफी ऑफ़ कॉपरेशन, वैकुण्ठ मेहता नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ कॉपरेटिव मैनेजमेन्ट, पूना 1970
7. देसाई, एन. अरविन्द-रिसर्च मैथोडोलॉजी इन मैनेजमेन्ट, आशीष पब्लिकेशन हाउस, 1990
8. गोयल, एस.एल.गोयल बी.बी. - एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ़ पर्सनल इन को-आपरेटिव, स्टालिंग पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1979

Corresponding Author

Upendra Kumar*

M.A. (History) U. G. C. – Net

www.ignited.in